समीक्षा, परिक्षा और प्रतिक्षा

मशीन के चक्के के अनुरूप गतिशील आपकी और हमारी जिन्दगी में आराम का तो नाम ही नहीं है। अपना चाहने वाला कोई कह भी देता है थोड़ा आराम कर लो, तब एक ही बात मुंह से निकलती है फुर्सत ही कहां है आराम करने की, भागते-दौड़ते यूं ही जीवन ठहर सा जाएगा। व्यापारी रम गया है लेनदेन में, विद्यार्थी मशगूल है पढ़ने में, रोगी रोग से कराह रहा है, भोगी भोग में लिप्त है, नौकरी वाला भाग रहा है, गृहणी काम में लगी है, कहां आराम किसे फुर्सत सब अपने हाल में मस्त हैं। इन सब स्थितियों परिस्थतियों के चलते आज चारों ओर हर आदमी तनाव में जी रहा है। बच्चे बस्ते के बोझ से, नौजवान अपनी बेरोजगारी से, व्यापारी अपने व्यापार के उतार-चढ़ाव से, रोगी रोग से, भोगी क्षीण होते अपने यौवन के कारण परेशान है, तनाव से ग्रसित है।

तनावपूर्ण जिन्दगी का भार ढो रहा आज का इन्सान यह कदापि नहीं सोच रहा है कि आखिर उसकी यह स्थिति क्यूं है ? कैसे निजात पाया जा सकता है। परन्तु सोचने समझने की भी फुर्सत कहां है किसी को, हर कोई प्रात:काल उठने के साथ ही यंत्रवत चलता ही चला जाता है। परिवार का सोच नहीं पत्नी और बाल बच्चों का सोच नहीं। ऐसी स्थिति देखकर लगता है जब वह स्वयं स्थिर नहीं है तब परिवार और बच्चों केा स्थिर कर उन्हें संस्कारवान, चरित्रवान और बलवान कैसे बना सकता है।

प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास यदि आदमी कर ले तो सम्भव है समाधान भी मिल जाएगा। जीवन की सफलता के लिए तीन सूत्र सर्वोपरि हैं जिसे कोई अपना ले तो अवश्य ही वह अपना ही नहीं अपने परिवार और आसपास के लोगों का भी जीवन सफल बना सकता है। समीक्षा, परीक्षा और प्रतिक्षा ऐसे सूत्र हैं जिन्हें भली-भांति समझकर आदमी स्वयं अपने जीवन में उतार ले तो आज की परिस्थितियों से वह निपट सकता है। इन शब्दों में ऐसे सार तत्व छिपे हुए हैं जिनका महत्व किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता।

आदमी को अपनी व्यस्तता के चलते सारे दिन में जो कार्य वह करता है उस कार्य के प्रति सोने से पूर्व थोड़ी सी समीक्षा अपनी स्वयं की भी करनी चाहिए। ऐसा करने से उसे न केवल आत्म संतोष ही होगा अपितु जो कार्य किया गया है, उसका तुलनात्मक अध्ययन भी हो जाएगा। वह स्वयं जान जाएगा कि सारा दिन जिस कार्य में बिताया गया है वह कैसा है, कार्य से किसे लाभ मिलेगा, हानि तो नहीं होगी, किसी का दिल तो दु:खी नहीं होगा, हताश या निराश तो नहीं होगा। स्वयं की समीक्षा करने के बाद जो आत्मसुख की अनुभूति उसे होगी वह किसी सातों सुख से सम्पन्न व्यक्ति को भी नहीं हो सकती।

त्रेतायुग में अयोध्या नरेश दशरथ के घर चारों राजकुमार जनकपुरी से विवाहोपरान्त बहुओं के साथ जब घर लौटे तो अयोध्या की खुशियों का पार नहीं था। राजा दशरथ भी प्रसन्न थे। अयोध्या नरेश अपने पास हमेशा दर्पण साथ रखा करते थे और अवसर अनुरूप दर्पण में यूं ही अपने आपको निहार लिया करते थे। राम विवाहोपरान्त दशरथ का दर्पण में निहारना और कान के पास श्वेत केशों पर नजर पड़ने प

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com